ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 26 अंकः 47 बुलेटिन अवधिः 21–25 जून, 2017 दिनः मंगलवार दिनाँकः 20 जून, 2017

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले के पर्वतीय क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – नैनीताल				
	21–06–2017	22–06–2017	23–06–2017	24–06–2017	25–06–2017
वर्षा (मिमी0)	25	10	10	5	5
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	23	23	23	24	23
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	14	13	13	14	14
बादल आच्छादन	पूर्णतः आच्छादन	घने बादल	घने बादल	घने बादल	घने बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	95	90	90	90	90
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	60	60	60	55	60
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	06	04	04	04	06
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम

आगामी 21 से 25 जून तक हल्की वर्षा होने तथा आसमान में घने बादल छाये रहने की सम्भावना है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (**13** से **19 जून** 2017 सुबह 8:30 तक) में आंशिक से घने बादल छाये रहे व 100.0 मि0मी0 वर्षा हुई तथा अधिकतम तापमान 21.3 से 24.0 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 7.5 से 15.3 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- ❖ धान की नर्सरी में किसी कीट का प्रकोप होने पर फिप्रोनिल 5 एस0 सी0 का 1ली0/500 ली0 पानी में घोलकर प्रति है0 की दर से छिड़काव करे।
- ❖ गन्ने में तना बेधक कीट का प्रकोप होने पर सिंचाई के पूर्व या बाद 20–25 कि0ग्राम0/है0 क्लोरपाइरीफास दवा का प्रयोग करें।
- ❖ धान की रोपाई हेतु नर्सरी के लिए खेत की मेढ़ बन्दी करें।
- ❖ धान की नर्सरी डाले।

- ❖ नर्सरी हेतु धान के शुद्ध बीज का प्रयोग करें।
- ❖ कीड़े–मकोड़े हेतु फसल सुरक्षा की व्यवस्था करे।

उद्यान प्रबन्धः

- ❖ मध्यम उॅचाई वाले पर्वतीय क्षेत्राो में सेब की अगेती प्रजातियो की तुड़ाई प्रारम्भ करे तथा मण्डियो में भेजे।
- ❖ गुठलीदार फलों में गमोसिस रोग के नियंत्रण के लिए स्ट्रैप्टोसाईकलिन 0.01/या कापर आक्सीक्लोराइड 0.025 प्रतिशत का छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करें।
- ❖ मध्यम ऊंचाई वाले पर्वतीय क्षेत्रों में सेब की देर से पकने वाली फल प्रजातियो के फलों को झड़ने से रोकने के लिए प्लेनोफिक्स नामक दवा का 10 पीपीएम छिड़काव करें
- ❖ ऊँचें पर्वतीय क्षेत्रो में फूलो के पॅखुड़ियो के झड़ने की अवस्था पर स्कैब रोग नियंत्रण हेतु कार्बन्डाजिम 0.05 प्रतिशत का प्रयोग करे।
- ❖ मिर्च एवं टमाटर की उपरी पत्तियो पर बारीक चितकबरे धब्बे दिखाई देने पर सर्वांगी कीटनाशी का 10 से 15 दिन के अन्तराल पर नियमित छिड़काव करे।
- ❖ फ्रासबीन एवं लोबिया में पत्ते सिकुड़ने की दशा में किसी सर्वांगी कीटनाशी का छिड़काव करे।
- ❖ मिर्च की फसल में ऊपर से डन्ठल काले पड़कर सूखने की समस्या की निदान हेतु संक्रमित शाखाओं को तोड़कर हटा दें एवं कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ टमाटर में फल बेधक का प्रकोप होने पर, क्लोरान्ट्रानिलिप्रोले 18.5 एस0सी0, 150 मि0ली0/है0 के छिड़काव के तीन दिन बाद या इन्डोक्साकार्ज 14.5 एस0सी0, 500मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद ही फल का उपयोग करें।
- ❖ टमाटर की फसल में सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर सायान्ट्रानिलीप्रोले 10.26 ओ0डी0, 900 मि0ली0/है0 या थियामेथोक्जाम 25 डब्लू0एस0जी0, 200 ग्राम/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद ही फल को खाने हेतु प्रयोग करें।
- ❖ बैंगन में तना एवं फल बेधक के नियंत्रण हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एस0जी0 200ग्रा0/है0, साइपरमैथ्रिन 25इसी 200मि0ली0/है0, लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 सी0एस0 300मि0ली0/है0 की दर से अन्तिम छिड़काव के पाँच दिन बाद फल का उपयोग करे।
- ❖ मिर्च में थ्रिप्स के नियंत्रण हेतु लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 इसी 300मि0ली0/है0 या फिप्रोनिल 5 एस0सी0 1लीटर/है0 की दर से छिड़काव के सात दिन बाद ही मिर्च का प्रयोग करें।
- ❖ मिर्च में माइट के नियंत्रण के लिए डाईफेन्थयुरान 50डब्लू0पी0 600ग्रा0/है0या लैम्डासाइहैलोथ्रिन 5 इसी 300मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद फल का प्रयोग करें।
- ❖ मध्यम ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रो में बन्द गोभी, फूल गोभी, ब्रोकली एवं गांठ गोभी की अल्प अवधि में तैयार होने वाली किस्मों का चयन कर पौधशाला में बीज बुवाई करें।
- ❖ मध्यम ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रो में यदि खेतों में पर्याप्त नमी हो तो असिंचित दशा में मूली, राई, धनिया, शलजम, गाजर, पाली आदि की बुवाई करें।
- ❖ मध्यम ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रो में पालीहाउस की फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई, सिंचाई एवं कीट नियंत्रण हेतु रसायन का छिड़काव करें।
- ❖ मध्यम ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रो में खीरा एव चप्पन कद्दू की खड़ी फसल के निराई–गुड़ाई कर आवश्यकतानुसार सिंचाई करें तथा फलों को बाजार में बिक्री करें।
- ❖ घाटी क्षेत्र में आलू,प्याज एवं लहसून की फसल यदि तैयार हो खुदाई करें।
- ❖ घाटी क्षेत्र में फ्रासबीन की हरी फलियों की तुड़ाई करें।
- ❖ घाटी क्षेत्र में टमाटर एवं शिमलामिर्च की खड़ी फसल में कीट नियंत्रण हेतु मेलाथियान 15 मिली./10 लीटर पानी में घोलकर तथा झुलसा रोग के रोकथाम हेतु मैन्कोजेब 20 ग्राम दवा 10 लीटर पानी में घोलकर दिन के समय छिड़काव करें। ध्यान रहे की धूप पर्याप्त मात्रा में हो।
- ❖ मध्यम ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रो में आलू की खड़ी फसल में झुलसा रोग नियंत्रण हेतु मैन्कोजेब रसायन का छिड़काव करें।

पशुपालन प्रबन्धः

- ❖ पशुओ को संक्रामक रोग से बचाने हेतु टीकाकरण करवायें।
- ❖ नाइट्रेट विषाक्तता होने पर पशु की श्वसन एवं नाड़ी दर बढ़ जाती है एवं सांस लेने में कठिनाई, मॉसपेशियों में ऐंठन व कमजोरी आ जाती है। इससे बचाव हेतु मेथिलीन ब्लू के 1 प्रतिशत विलयन की 50–100 मि0ली0 मात्रा सीधे ही नस में देना चाहिए।

- सायनाइड ग्रस्त चारा खाए हुए पशु को पानी नही पिलाना चाहिए तथा चारागाहो में चराने ले गये पशुओ को कम बढ़ी हुई ज्वार, बाजरा, चरी की फसल न खाने दे।
- छोटे मुर्झाये हुए पीले व सुखकर ऐठे हुए पौधो को चारे के रूप में उपयोग नही करे।
- गर्मी के मौसम में पशुशाला के आसपास की नालियो में मेलाथियॅान अथवा अन्य कीटनाशक दवाइयो का छिड़काव समय समय पर कराते रहे।
- विदेशी गायें अधिक गर्मी सहन नही कर पाती जिससे उनके आहार ग्रहण करने की क्षमता में कमी आ जाती है। और उनका उत्पादन प्रभावित होता है। अतः विदेशी गायो का उत्पादन बनाये रखने तथा बीमारियो से बचाव हेतु गौशाला के अन्दर तापमान नियंत्रण हेतू शीतल यंत्र जैसे पंखा, कूलर अथवा आधुनिकतम शीतल यंत्र की व्यवस्था करे।
- अगर पशु लू के प्रकोप का शिकार हो जाए तो पास के पशु चिकित्सक से मिलकर उसका तुरन्त उपचार करायें।
- पशुओं को स्वच्छ, ताजा एवं ठंडा जल दिन में तीन बार (सुबह, दोपहर, शाम) पिलाना चाहिए। यदि पशु के शरीर में पर्याप्त मात्रा में पानी मौजूद हो तो उसकी चमड़ी के तापमान एवं मौसम के तापमान में सामंजस्य बना रहता है एवं पशु को लू भी नहीं लगती।
- गर्मी से बचाने हेतु पशुओं को संतुलित आहार जिसमें सभी पोषक तत्व प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, खनिज लवण तथा विटामिन्स उचित मात्रा एवं उचित अनुपात में उपस्थित हों, देवें। सूखे चारे के साथ हरा चारा एवं दाना अवश्य दें।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर